भारत-प्रजातंत्र

प्रस्तावना-

उद्दिष्ट

देश के नागरिक

स्वस्थ जीवन-संघर्षहीन

जिम्मेदार शासन

शासनकर्ता कैसा हो ?

ईश्वर के सामान-जगन्नियंता के समान

विशेष गुण ?

दीन-दलितों तक पहुँचे

उनके दुःख दर्द जान सके

उन्हें दूर करने की कोशिश करें

सबल बनाएँ

अर्थात-

यह काम शासनकर्ता का है नेताओं का है

अतः नेता कैसा हो ?

गांधीजी जैसा-

खुद गांधीजी ऐसा नेता बनने के लिए

ईश्वर से प्रार्थना करते है –

हे नम्रता के सम्राट

कवि-मोहनदास करमचंद गांधी

'सम्राट' शब्द का अर्थ है श्रेष्ठ व्यक्ति |राजाओं में श्रेष्ठ राजा को सम्राट कहा जाता है | जैसे अभिनय में श्रेष्ठ व्यक्ति को अभिनयसम्राट कहा जाता है |कवि ईश्वर को नम्रता के सम्राट कहकर पुकारता है |जो गरीब, दीन-दुखियारे भक्तों की पूछताछ करते है | उनके दुःख दूर करते हैं |

छात्रों, हम ऐसे ईश्वर समान मानवों को जानते हैं |

खुद को सूली चढानेवाले लोगों के लिए ईश्वर से क्षमायाचना करनेवाले

निःस्वार्थ होकर सत्य की खोज करने के लिए घर छोड़कर जानेवाले

समाज से पीड़ित होनेपर उसी समाज के लिए पसायदान की माँग करनेवाले

दोस्तों,

मन में दीन-दुखियारों के लिए अपार करुणा लिए प्रस्तुत कविता के कवि ईश्वर से प्रार्थना कर रहे हैं | आप इनका नाम सुनकर ही कह उठेंगे खुद कवि तो हमारे राष्ट्रपिता रहे हैं जो आजन्म सत्य के मार्गपर चलते रहें| सही तो यही है कि ईश्वर की तरह क्षमाशील और विशाल हृदयी गांधीजी आनेवाली कई पीढियों को जीने की राह दिखाते रहेंगे |

हम भारतीय उन्हें किसी कवि या लेखक के रूप में नहीं तो अहिंसा के पुजारी सत्य के आग्रही ,निष्ठावान मातृभूमिभक्त के रूप में देखते आए है | वे एक ऐसे समाजसेवक रहे जो लोगों के नेता बने केवल भारतीय लोगो के नहीं बल्कि सारे संसार के !कविता पढ़कर तो पाठक यही मानेंगे कि गीत क्या यह तो नित्य पठनीय प्रार्थना है|

आइए-

प्रस्तुत कविता का आशय समझ लेते है ------

आशय –

दीन दलितों की हीन कुटिया के निवासी

गंगा- जमुना और गोदावरी के जलो से सिंचित

इस सुंदर देश में,

तुझे सब जगह खोजने में,

हमें मदद दे |

अपना वैभव,स्वर्ग जैसी सुंदर जगह छोड़कर ईश्वर इस पृथ्वी के सामान्य लोगों के घर में झोपड़ी में रहने आए है,यह देखकर कवि शुरुवात में ही उन्हें नम्रता के सम्राट करके संबोधित करते है |कवि को विश्वास हो जाता कि यह असाधारण बात करके दिखानेवाले ईश्वर हमारी मदद जरुर कर सकते है | वे सर्वव्यापि है-अतः भारत में उत्तर से दक्षिणतक फैले इस सुंदर देश में उनका निवास जरुर होगा | वह ईश्वर से मदद के लिए बिनती कर्ता है |

हमें ग्रहण शीलता और खुला दिल दे,

तेरी अपनी नम्रता दे,

भारत की जनता से

एकरूप होने की शक्ति और उत्कंठा दे |

जब हम अपना मन खुला रखते है किसी भी तरह के संशय या भेदाभेदरहित बना लेते है तब औरों को समझ पाते है |दूसरो के गुणों कि प्रशंसा कर सकते है ,अवगुणों को क्षमापित कर सकते है | इस गुणग्राहकता तथा क्षमाशीलता से से हम समाज में घुलमिल सकते है | उनके सुख-दुःखो को जान ले सकते है –उनकी सेवा कर सकते है |कवि कहता है कि समुचे भारत कि जनता को वह जानना चाहता है और मन में यही इच्छा रहे ऐसी बिनती ईश्वर से करता है |

हे भगवान,

तू सभी की मदद के लिये आता है-

जब मनुष्य शून्य बनकर तेरी शरण लेता है।

हमें वरदान दे कि

सेवक और मित्र के नाते,

इस जनता की हम सेवा करना चाहते है,

इससे कभी अलग न पड जाये

हमें त्याग, भक्ति और नम्रता की मूर्ति बना,

हम जानते है कि जब हम संभ्रमित हो जाते है,खुद को असहाय महसूस करने लगते है,अपना अभिमान छोड़कर विनम्र बन जाते है तो ईश्वर के सामने नतमस्तक होते है | इसी विश्वास से कि वह हमारी जरुर मदद करेगा –हमें राह दिखाएगा ....

कवि कहता है ,हे ईश्वर इसी विश्वास से ही मै भी तुम्हारे पास आया हुँ | समाज का सेवक और मित्र बनकर मै जनता की सेवा करना चाहता हुँ | मुझे इस विचार से कभी अलग मत करना |इनकी सेवा करते समय त्याग के लिए मेरा मन तैयार रहे | वह कभी सेवाकार्य से न हटे | विनम्र बनकर सेवाकार्य में जुटे रहे |

ताकि

इस देश को हम ज्यादा समझें और ज्यादा चाहें

हे प्रभो, हमें वरदान दे |

दोस्तों,कवि अंतिम कड़ी में अपनी प्रार्थना का हेतु बता रहा है |

वह कहता है

इसप्रकार के कार्य में अपनी जिंदगी लगा देते कि इच्छा वह इसलिए करता है कि वह अपने देश को –पुरे देश को जान सके | श्रद्धा और प्रेम से अपनी मातृभूमि सेवा में जुटा रहे |

मित्रो,

शायद आप जानते होगे कि गांधीजीने देश कई प्रांतो कि यात्रा कि थी|हजारो लोगों से वे मिले थे-उनके प्रश्नों को परेशानियों को समझ लिया था उन्होंने |

उददेश:

छात्रों,

जनता की सेवा करने का विचार किसी व्यक्ति से सुनते हैं तो आप भी नेता लोगों को याद करते होगें |

है न ?

आप सौ प्रतिशत सही दिशा में सोच रहे है | भारत ने स्वतंत्रता के बाद प्रजातंत्र शासन पद्धति को स्वीकारा है | हमें गर्व है कि भारत संसार का वह सबसे बड़ा देश है । जिसने लोकतंत्र को शासन पद्धति के रूप चुना है। इस शासन पद्धति में नेतागण तथा देश के मंत्रिगण काफी अहम् भूमिका अदा करते है |

कैसा हो नेता ? समाज तथा देशहित के लिए किसप्रकार का नेतृत्त्व आवश्यक है ?उम्र की अठारहवी सालगिरह से ही आप मतदान करके अपना नेता चुनते सकते है | अतः बड़ी सोच और समझ के साथ आपको यह निर्णय करना होगा |

निःस्वार्थ होकर विनयी बनकर जनसेवा करने निकले महात्मा जैसा ?

आपके व्यक्तित्त्व की तैयारियाँ अभी से शुरू हो गई है| तो हो जाएँ तैयार.........

मनन और चिंतन के लिए ....

इसी कविता का आधार लेकर ....

यही इस पाठ का उददेश्य है | समझ गए ना आप?

Assessment

मूल्यांकन

१)कवि क्या बनकर जनता की सेवा करना चाहता है ?

अ)राजा और मालिक

ब)मालिक और नौकर

क)सेवक और मित्र

ड)ईश्वर और मित्र

२)हे नम्रता के सम्राट कविता में ....की भावना उजागर हुई है ....

अ)देशसेवा

ब)मातृसेवा

क)मित्रसेवा

ड)परिवार सेवा

३) नम्रता के सम्राट कविता के कवि का नाम है ....

अ)विनायक दामोदर सावरकर

ब)मोहनदास ईश्वरचंद्र गांधी

क)मोहनदास करमचंद गांधी

ड)आचार्य विनोबा भावे

४)कवि के मतानुसार जनता से एकरूप होने के लिए इनमे से कौनसा गुण आवश्यक नहीं ?

अ)त्याग

ब)सेवा

क)अहंकार

ड)नम्रता

परियोजना:

- गांधीजी ने कहा था, “अगले जन्म में भी मैं ईश्वर से ‘बा’ (कस्तुरबा) को ही पत्नी के रूप में माँग लूँगा|”

http://hi.wikipedia.org/wiki/%E0%A4%95%E0%A4%B8%E0%A5%8D%E0%A4%A4%E0%A5%82%E0%A4%B0%E0%A4%AC%E0%A4%BE_%E0%A4%97%E0%A4%BE%E0%A4%82%E0%A4%A7%E0%A5%80 इस साईट पर जाकर कस्तुरबा गांधी के विशेष गुणों की सूची तैयार कीजिए|

- नेल्सन मंडेला और अब्राहम लिंकन इनके जीवनी के बारे में जानकारी प्राप्त कीजिए | (आठ-दस पंक्तियों का परिच्छेद लिखिए)